कलीसिया अध्याय 33

1	**प्रार्थना**

समूह का अगुवा। अपने समूह तथा कलीसिया निर्माण करने से सम्बन्धित इस पाठ्यक्रम को प्रार्थना के साथ परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2	**बाँटना** (20 मिनट) *[शान्त समय]* **इब्रानियों 1-3**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** **(*या* अपने नोट्स को *पढ़ें*)** कि आपने दिये गये बाइबल अनुच्छेद (इब्रानियों 1 से 3) से शान्त समय में क्या सीखा।
अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3	**याद करना** (5 मिनट) *[यूहन्ना में प्रमुख वचन]* **(13) यूहन्ना 13:34-35**

दो-दो करके **पुनरावलोकन** करें।
(13) यूहन्ना 13:34-35 - मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूँ कि एक दूसरे से प्रेम रखो : जैसा मैंने तुम से प्रेम रखा है, वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम करो।

4	**शिक्षा** (85 मिनट) *[कलीसिया निर्माणकारी सेवकाई]* **सलाह देना और निर्णय लेना**

परिचय। यह शिक्षा सलाह देने तथा निर्णय लेने हेतु सिद्धान्तों और अभ्यास के सन्दर्भ में है। कृपया प्रश्न पूछें क्योंकि, उन्हें कुछ निर्णयों को लेना है। हम सीखेंगे कि किस प्रकार लोगों को सलाह दी जाये और किस प्रकार उनकी निर्णय लेने, चुनाव करने और योजना बनाने में सहायता की जाये। हम यह भी सीखेगें कि किस प्रकार किसी प्राचीन या मसीही कलीसिया या मसीही संगठन के अगुवे को बोर्ड में या कलीसिया के परिषद् में निर्णन लेना, चुनाव करना और योजना बनानी चाहिए।

निम्नलिखित बातों पर भी गौर करें :

- मैनुएल 7 के परिशिष्ट 10 में "सलाह देने के लिए जानकारियों को इकट्ठा करना"।
- मैनुएल 7 के परिशिष्ट 11 में "उत्तम योजना तैयार करना"।

क. अपने निर्णयों, चुनावों और योजनाओं के सन्दर्भ में सलाह माँगना सीखें

परिचय। किसी मसीही को दूसरों को सलाह देने से पहले दूसरों से सलाह माँगना और उसे अपने जीवन में लागू करना सीखना चाहिए। नीतिवचन में बुद्धि से पूर्ण बहुत सी शिक्षाएँ लिखी गयी हैं। नीचे बताया गया है कि अच्छी सलाह माँगने और उसे ग्रहण करने से आपके जीवन में कौन-से तीन अच्छे प्रभाव

पड़ सकते हैं।

1. एक मसीही जन अच्छा निर्णय लेने, चुनाव करने और योजना बनाने के लिए सलाह माँगता है।

पढ़ें नीतिवचन 15:22

खोजें और चर्चा करें। एक मसीही को सलाह लेना सीखना क्यों चाहिए?

ध्यान दें। एक मसीही को अच्छा निर्णय लेने, चुनाव करने और अच्छी योजना बनाने के लिए सलाह माँगना सीखना चाहिए।

नीतिवचन 15:22 में लिखा है, "बिना सम्मति की कल्पनाएँ निष्फल हुआ करती हैं। परन्तु बहुत से मंत्रियों की सम्मति से बात ठहरती है।" सभी लोग निर्णय लेते, चुनाव करते और योजना बनाते हैं। लेकिन हर एक जन न अच्छे निर्णय लेते, न अच्छे चुनाव करते और न ही अच्छी योजना बनाते हैं, और ऐसा इसलिए होता है क्योंकि वे इस विषय पर किसी की सलाह नहीं लेते (अर्थात अनुभवी लोगों, विशेषज्ञों और बुद्धिमान लोगों की सलाह)। वे सोचते हैं कि वे सब कुछ जानते हैं और उन्हें अपने जीवन में किसी की आवश्यकता नहीं है। जबकि, परमेश्वर कहता है कि ऐसे लोगों की युक्ति असफल हो जाएगी। अत: ध्यान दें कि दूसरों के प्रश्न और उनकी सलाह आपको अपने निर्णय, चुनाव और योजना के दूसरे पहलुओं पर विचार करने में सहायता करेगी।

हर एक निर्णय, चुनाव और योजना के कार्यन्वित होने पर उसके परिणाम सामने आते हैं। परिणाम अच्छे या बुरे या फिर आपकी अपेक्षा से पूरी तरह अलग हो सकते हैं। उस निर्णय, चुनाव और योजना के सम्भव परिणामों के बारे में दूसरे व्यक्ति के साथ बैठकर विचार करना, आपकी कुछ हकीकत से जुड़े या सोच विचार कर किये गये चुनाव और बेहतर योजना बनाने में सहायता करेगा।

(1) आत्मिक और नैतिक मामलों में, आपके सलाहकार मसीही होने चाहिए।

एक मसीही होने के नाते आप मसीह की देह का एक हिस्सा हैं और इसलिए यह बहुत ज़रूरी है कि शरीर के दूसरे अंग भी साथ मिलकर बेहतर ढंग से कार्य करें (1 कुरिन्थियों 12:21)। आपको अपने नियुक्त निर्णय, चुनाव और योजना और उनके परिणामों पर विचार करने में सहायता करने के लिए उनके प्रश्नों और उनकी सलाह की ज़रूरत है।

आपके सभी आत्मिक और नैतिक मामलों में, आपके सलाहकार नया जन्म पाये हुए मसीही, आत्मिक रूप में परिपक्व और भक्त होने चाहिए, क्योंकि :

- अविश्वासियों के पास मसीह का मन नहीं होता (1 कुरिन्थियों 2:12-16)
- अपरिपक्व विश्वासी भले और बुरे में अन्तर नहीं पहिचान सकते हैं (इब्रानियों 5:14)
- और परमेश्वर बुराई करने वालों की नहीं सुनता (1 पतरस 3:12)

(2) अन्य मामलों में आपके सलाहकार गैर मसीही विशेषज्ञ हो सकते हैं।

एक मसीही होने के नाते आप अपने समाज का भी एक हिस्सा हैं और यह जरूरी हैं कि समाज के अन्य सदस्य आपके लिए अपनी बेहतर सेवा प्रदान करें। आत्मिक और नैतिक मामलों को छोड़कर बाकि मामलों में आपके सलाहकारों में गैर मसीही भी शामिल होने चाहिए, क्योंकि कई क्षेत्रों में जो महारथ उन्हें हासिल है उसकी आपको बहुतायत से ज़रूरत होती है (जैसे कि, नयी कार खरीदने में)।

आपको बहुत से सलाहकारों या परामर्शदाताओं की सलाह की खोज करनी चाहिए, क्योंकि आपको सही निर्णय लेने, चुनाव करने और योजना बनाने के लिए बहुत से तथ्यों की जानकारी चाहिए होती है, और आपको अपने निर्णय, चुनाव और योजना के साथ-साथ उनके परिणामों पर भी विचार करना ज़रूरी होता है।

जितनी अच्छी तरह से आपके सलाहकार आपको व आपकी परिस्थितियों को जानते हैं, उतनी ही अच्छी सलाह वे आपको दे पाएँगे (नीतिवचन 27:23)।

2. एक मसीही परमेश्वर के साथ और लोगों के साथ अपने सम्बन्ध को मज़बूत बनाने तथा परिस्थितियों में अपनी स्थिति बेहतर करने के लिए सलाह माँगता है।

खोजें और चर्चा करें। निम्नलिखित बाइबल के पदों के आधार पर, एक मसीही को क्यों दूसरों से सलाह माँगना सीखना चाहिए?

(1) आप परमेश्वर के साथ अपने रिश्ते को मज़बूत बनाने के लिए दूसरों से सलाह माँगते हैं।

पढ़ें यशायाह 30:1-2, में लिखा है, "हाय उन पर... जो युक्ति तो करते हैं परन्तु मेरी ओर से नहीं, वाचा तो बाँधते हैं परन्तु मेरी आत्मा के सिखाए नहीं... वे मुझ से पूछे बिना ही जाते हैं।" परमेश्वर चाहता है कि आप परमेश्वर पर निर्भर होकर अपने निर्णयों, चुनावों और योजना को साकार रूप प्रदान करें। परमेश्वर चाहता है कि उसके लोग उससे बूझें या सलाह ले, उसकी आत्मा की अगुवाई में होकर ही दूसरे लोगों से सम्बन्ध बनाएँ और उसकी ही योजना को पूरा करें। परमेश्वर की सलाह पूछने और उसे स्वीकार करने से आपको परमेश्वर की इच्छा और उसके उद्देश्य का पता चलेगा। इससे आपको परमेश्वर के साथ एक मज़बूत सम्बन्ध बनाने में सहायता मिलेगी।

(2) आप दूसरे लोगों के साथ अपने सम्बन्ध को मज़बूत बनाने के लिए दूसरों से सलाह माँगते हैं।

पढ़ें नीतिवचन 19:20-21; 14:22 - नीतिवचन 19:20-21 में लिखा है, "सम्मति को सुन ले, और शिक्षा को ग्रहण कर, कि तू अनन्तकाल में बुद्धिमान ठहरे। मनुष्य के मन में बहुत सी कल्पनाएँ होती हैं परन्तु जो युक्ति यहोवा करता है वही स्थिर रहती है।" जो व्यक्ति किसी से सलाह नहीं लेता या सलाह को ग्रहण नहीं करता वह व्यक्ति परमेश्वर की दृष्टि में मूर्ख है। हर एक मसीही को सलाह सुननी चाहिए और निर्देशों को स्वीकार करना चाहिए। नीतिवचन 14:22 में लिखा है, "भली युक्ति निकालने वालों से करूणा और सच्चाई का व्यवहार किया जाता है।" दूसरों से भली युक्ति माँगने और उसे स्वीकार करने से आप बुद्धिमान, विश्वासयोग्य और प्रेम करने वाले बनेंगे। इस प्रकार आपको दूसरों से अच्छा सम्बन्ध बनाने में सहायता मिलेगी।

(3) आप कठिन परिस्थितियों में अपनी स्थिति सुधारने के लिए दूसरों से सलाह माँगते हैं।

पढ़ें नीतिवचन 28:14 - इसमें लिखा है, "जो मनुष्य निरन्तर प्रभु का भय मानता रहता है वह धन्य है; परन्तु जो अपना मन कठोर कर लेता है वह विपत्ति में पड़ता है।" किसी से सलाह माँगने तथा उसे ग्रहण करने के लिए मनुष्य को नम्र होना पड़ता है। जो व्यक्ति सलाह पाकर भी अपने हृदय को कठोर बनाये रखता है, वह निश्चित रूप से परेशानी में पड़ता है। परमेश्वर घमण्ड का सामना करता है (1 पतरस 5:5) और पतन से पहले घमण्ड होता है। आपको अपने हृदय को नम्र, सीखने योग्य और

परमेश्वर का भय मानने वाला बनाना है। जब आप दूसरे मसीहियों द्वारा दी जाने वाली सलाह को सुनते हैं, तो आप ऐसे निर्णय लेने, चुनाव करने और युक्ति बनाने में सक्षम हो जाते हैं जो बाइबल में लिखी परमेश्वर की इच्छा और उसके उद्देश्य पर आधारित होती है। जब आप भली युक्ति की माँग करते और उसे मानते हैं तो आप परेशानियों से बचे रहेंगे। आप मुश्किल परिस्थितियों का सामना करने में अपने आपको ज़्यादा सक्षम महसूस करेंगे।

3. एक मसीही अपने निर्णयों, चुनावों और अपनी योजनाओं के लिए परमेश्वर के सम्मुख ज़िम्मेदार ठहरता है।

पढ़ें 2 कुरिन्थियों 5:10

खोजें और चर्चा करें। एक मसीही को अपने निर्णयों, चुनावों, और अपनी योजनाओं के लिए ज़िम्मेदार होना क्यों सीखना चाहिए?

ध्यान दें। आपको कभी भी दूसरों की सलाह पर ही निर्भर होकर कोई भी निर्णय, चुनाव और योजना को अन्जाम नहीं देना चाहिए। क्योंकि अगर इस दशा में वह निर्णय, चुनाव या योजना असफल हो जाते हैं तो आप अपने सलाहकार को ही दोषी ठहराएँगे। आप किसी भी प्रकार का निर्णय लेने, चुनाव करने और योजना बनाने के लिए पूरी तरह से ज़िम्मेदार हैं। परमेश्वर आपको ही अपने निर्णय, चुनाव और योजना के लिए ज़िम्मेदार या उत्तरदायी ठहराएगा।

ख. किसी को सलाह देने से पहले तथ्यों या जानकारियों को एकत्रित करना सीखें

किसी को सलाह देने से पहले एक मसीही को, ध्यान देना, सुनना और प्रश्न पूछना सीखना चाहिए। पर्याप्त जानकारी हासिल करने के बाद ही वह किसी को बेहतर सलाह देते हुए लोगों की अच्छा निर्णय लेने में सहायता कर सकता है।

मैनुएल 7 के परिशिष्ट 10 में देखें, "सलाह देने से पहले जानकारी कैसे एकत्रित करें"।

ग. स्वयं अपने निर्णय लेना, चुनाव करना और योजना बनाना सीखें

परिचय। निर्णय लेने में चुनाव करना और योजनाएँ बनाना शामिल होता है। कुछ निर्णयों को बाइबल की स्पष्ट शिक्षाओं पर आधारित होना बहुत ज़रूरी है। उदाहरण के लिए, चोरी न करने और झूठ न बोलने का निर्णय दस आज्ञाओं पर आधारित है। दूसरे निर्णय बाइबल में प्रगट परमेश्वर की बुद्धि पर आधारित होने चाहिए, लेकिन इन्हें पूरा करने के लिए काफी प्रयास की आवश्यकता होती है। उदाहरण के लिए, विवाह करें या न करें या कौन सी नौकरी करें, बाइबल में नहीं बताया गया है। अन्त में कुछ ऐसे निर्णय हैं जिन्हें हमें उन परिस्थितियों के आधार पर लेना है जिन्हें परमेश्वर ने हर एक जन के लिए अद्भुत ढंग से तैयार कर रखे हैं। इस प्रकार के निर्णयों का सम्बन्ध उन परिस्थितियों में हमारी मनोदशा और प्रतिक्रिया से होता है, परिस्थितियों को चुनने की आज़ादी से नहीं।

1. बाइबल में परमेश्वर के प्रकाशनों को इसलिए दिया गया है कि ताकि परमेश्वर की इच्छा और उसके लक्ष्यों के अनुसार निर्णय लिये जा सकें।

परिचय। जिस किसी चीज़ के बारे में परमेश्वर सोचता है कि वह मसीहियों के लिए ज़रूरी है, उन्हें उसके बारे में जानना, उस पर विश्वास करना, वैसा बनना या वैसा ही करना चाहिए और उसे बाइबल में पहले से ही प्रगट कर दिया गया है। अत: निर्णय लेने, चुनाव करने और परमेश्वर को प्रसन्न करने

वाली योजनाओं को बनाने के लिए, एक मसीही को बाइबल का प्रयोग करना सीखना चाहिए और अपने निर्णयों, चुनावों और योजनाओं को परमेश्वर की प्रगट इच्छाओं पर आधारित करना चाहिए। *परमेश्वर के प्रकाशन में उसकी विशेष और सामान्य शिक्षाएँ (निर्देश) शामिल होती हैं।* ये शिक्षाएँ मिलकर एक ऐसा सीमित ढाँचा तैयार करती हैं जिसके अन्तर्गत रहते हुए एक मसीही को अपने निर्णय लेने, चुनाव करने और योजनाएँ बनानी पड़ती है।

(1) विशेष शिक्षाएँ (परमेश्वर की नैतिक इच्छा)।

सिखाएँ। परमेश्वर की विशेष शिक्षाओं में विशेष आज्ञाएँ, निषेध, और बाइबल की शिक्षाएँ शामिल हैं जिन्हें परमेश्वर की नैतिक इच्छाएँ भी कहा जाता है। ये शिक्षाएँ मसीहियों को बताती हैं कि परमेश्वर की दृष्टि में क्या सही है और क्या गलत है। परमेश्वर की यह आज्ञा है कि सभी लोगों को इन विशेष आज्ञाओं, निषेध और शिक्षाओं को मानना चाहिए, फिर चाहे उनकी मानवीय प्रवृति, मानवीय सस्कृति, प्राथमिकताएँ, या भावनाएँ कैसी भी क्यों न हों। हर एक मनुष्य को इस बात का चुनाव ज़रूर करना चाहिए कि वह परमेश्वर की आज्ञाओं को मानेगा या नहीं।

कई बार एक मसीही परमेश्वर की आज्ञाओं को मानना चाहता है, लेकिन वह अनिश्चित होता है कि यह आज्ञा सभी मसीहियों के लिए है या फिर किसी विशेष व्यक्ति के लिए या किसी समूह के लिए है।

विशेष शिक्षाओं के उदाहरण जो सभी मसीहियों के लिए हैं। "तू किसी सूरत या मूरत की पूजा न करना"। "तू खून न करना"। "तू व्यभिचार न करना"। "तू चोरी न करना"। "तू झूठ न बोलना" (निर्गमन 20; तुलना करें लैव्यव्यवस्था 18:6,20,22,23)। "मन फिराओ और सुसमाचार पर विश्वास करो" (मरकुस 1:15)। "मसीह को अपने प्रभु के रूप में ग्रहण करो"। "लगातार मसीह में जीवन व्यतीत करो"। "मसीह में जड़ पकड़ते और बढ़ते चले जाओ" (कुलुस्सियों 2:2-6)। "लोगों को अपने विरूद्ध बुरा करने पर क्षमा करो" (मत्ती 6:14)। "अपने शत्रु से प्रेम करो, जो तुमसे घृणा करते हैं उसके लिए भला करो, जो तुम्हे श्राप दें उन्हें आशीर्वाद दो, जो तुम्हारा अपमान करे उनके लिए प्रार्थना करो" (लूका 6:27-28)। किसी गैर विश्वासी से विवाह न करो" (2 कुरिन्थियों 6:14)।
इन विशेष शिक्षाओं को परमेश्वर की नैतिक इच्छा भी कहा जाता है।

विशेष शिक्षाओं के वे उदाहरण जो विशेष लोगों या विशेष परिस्थिति में दिये गये हैं। पशुबलि और दशमांस देने की आज्ञाएँ केवल पुराने नियम में परमेश्वर के लोगों को अर्थात् इस्राएल को दी गयी थी (मलाकी 1:1,6-14; 3:6-12), नये नियम में परमेश्वर की निज प्रजा अर्थात् कलीसिया को नहीं। अपनी सारी धन सम्पत्ति को बेचकर गरीबों में बाँटने की आज्ञा केवल उस धनी युवक को दी गयी थी (मरकुस 10:21)। खतना करने की आज्ञा केवल पुराने नियम में ही परमेश्वर के लोगों को दी गयी थी (उत्पत्ति 17:9-14; गलातियों 5:3-4; 6:12-15)। सरकार केवल उन लोगों को मृत्यु दण्ड दे सकती है जिन्होंने जानबूझकर किसी की हत्या की हो (उत्पत्ति 9:6; निर्गमन 21:12; गिनती 35:16-30-33; व्यवस्थाविवरण 19:11-13; न्यायियों 9:24; 2 राजाओं 14:5-6; मत्ती 26:52; रोमियों 13:4)।

इसलिए एक मसीही को बाइबल का सही अर्थ निकालना आना चाहिए। यदि आप बाइबल का मतलब समझना चाहते हैं तो आपको अपने साथ किसी बुद्धिमान और परिपक्व मसीही को शामिल करना चाहिए।

कई बार एक मसीह इस बारे में अनिश्चित होता है कि वह किसी विशेष शिक्षा, आज्ञा या निषेध को अपने व्यवहारिक जीवन में किस प्रकार प्रयोग करे। इसके लिए उसे परमेश्वर के आत्मा से प्रार्थना करनी

चाहिए और सक्षम मसीही जन से सलाह लेनी चाहिए। परमेश्वर पवित्र आत्मा के द्वारा उसके मन, हृदय और उसके कामों में अगुवाई करेगा (भजन 143:8-10)।

(2) सामान्य शिक्षाएँ (परमेश्वर की बुद्धि)।

पढ़ें भजन 32:8-10; यशायाह 48:17; याकूब 1:5-8

सिखाएँ। सामान्य शिक्षाओं में सारी सामान्य आज्ञाएँ, निषेध और बाइबल की शिक्षाएँ शामिल हैं जिन्हें हम परमेश्वर का ज्ञान या बुद्धि भी कहते हैं। वे मसीहियों को बताती है कि परमेश्वर की दृष्टि में क्या बुद्धिमानी है और क्या मूर्खता है। परमेश्वर मसीहियों को आज्ञा देता है वह भले निर्णयों को लेने, चुनावों को करने और योजनाओं को बनाने के लिए उसके ज्ञान का प्रयोग करें।

कई बार एक मसीही को अपने जीवन में महत्वपूर्ण निर्णय लेना पड़ता है। उसे बाइबल से कोई निर्देश नहीं मिलता फिर भी उसे दो विकल्पों में से किसी एक का चुनाव करना पड़ता है। इस प्रकार की परिस्थितियों में ही परमेश्वर यह वायदा है कि वह मसीही की सही मार्ग में अगुवाई करेगा। भजन 32:8-10 में, परमेश्वर का यह वायदा है, "मैं तुझे बुद्धि दूँगा, और जिस मार्ग में तुझे चलना होगा उस में तेरी अगुवाई करूँगा; मैं तुझ पर कृपा दृष्टि रखूँगा और सम्मत्ति दिया करूँगा।" यशायाह 48:17 में परमेश्वर का यह वायदा है, "मैं ही तेरा परमेश्वर यहोवा हूँ जो तुझे तेरे लाभ के लिए शिक्षा देता हूँ और जिस मार्ग से तुझे जाना है उसी मार्ग पर तुझे ले चलता हूँ।" और याकूब 1:5-8 में बाइबल मसीहियों से आग्रह करती है कि वे परमेश्वर से प्रार्थना करें और उससे मिलने वाली बुद्धि माँगें।

ऐसी परिस्थितियों के उदाहरण जिसमें एक निर्णय लिये जाने की ज़रूरत है। हमारे जीवन में ऐसे बहुत से क्षेत्र हैं जिसके लिए परमेश्वर ने कोई सीधी या विशेष आज्ञा या शिक्षा प्रदान नहीं की है। उदाहरण के तौर पर, हम निम्नलिखित प्रश्नों में किस प्रकार परमेश्वर की इच्छा को पा सकते हैं, "मुझे किस शिक्षा को मानना चाहिये?", "मुझे किस नया जन्म पाये हुए मसीही (विशेष नाम) से विवाह करना चाहिए?" "मुझे यह वस्तु खरीदनी चाहिए या नहीं?" "मुझे किस प्रकार की जीवनशैली को अपनाना चाहिए?"

सामान्य शिक्षाओं (निर्देशों) के उदाहरण। प्रभु का धन्यवाद हो, कि परमेश्वर ने हमें अपनी इच्छा को समझने और सही निर्णय लेने, सही चुनाव करने और उचित योजना बनाने के लिए सामान्य आज्ञाएँ, निषेध व शिक्षाएँ और सिद्धान्त अर्थात् उसका ज्ञान प्रदान किया है जो बाइबल में लिखा है। उदाहरण के लिए :

"और यह परखो, कि प्रभु को क्या भाता है" (इफिसयों 5:10)।

"इसलिए ध्यान से देखो, कि कैसी चाल चलते हो; निर्बुद्धियों के समान नहीं पर बुद्धिमानों के समान चलो (इफिसियों 5:15-16)।

"इसलिये हम उन बातों का प्रयत्न करें जिनसे मेल मिलाप और एक दूसरे का सुधार हो" (रोमियों 14:19)।

बहुत से मामलों में हमें बिल्कुल भी इस बात का पता नहीं होता है कि परमेश्वर को क्या भाता है, इन परिस्थियों में क्या बेहतर रहेगा, वास्तव में अवसर क्या है या कि काम के द्वारा शान्ति और पारस्परिक उन्नति होगी। परमेश्वर सभी लोगों को आज्ञा देते हैं कि वे परमेश्वर द्वारा प्रदान की गयी सामान्य शिक्षाओं के आधार पर बुद्धिमानी से निर्णय लेने की ज़िम्मेदारी उठाएँ। अगर कोई मसीही जन इस बात को लेकर अनिश्चित हो कि किसी विशेष परिस्थिति में उसे परमेश्वर की किस शिक्षा या निर्देश का पालन करना चाहिए, तो उसे निर्णय लेने के लिए परमेश्वर की सामान्य शिक्षाओं और ज्ञान और सलाह

का प्रयोग करना चाहिए। मैनुएल 4 के, 43 अध्याय के परिशिष्ट 18 में "परमेश्वर की इच्छा को खोजना" को देख सकते हैं।

(3) परमेश्वर के ज्ञान का स्रोत।

सिखाएँ। परमेश्वर के ज्ञान के स्रोत निम्नलिखित है :

- बाइबल (भजन 119:97-100)
- प्रार्थना (याकूब 1:5)
- उसके सलाहकार (नीतिवचन 11:14)
- अनुसंधान (नहेम्याह 2)

(4) बुद्धि से पूर्ण प्रश्न।

सिखाएँ। परमेश्वर चाहता है कि उससे प्रेम करने वाले मसीही जन, निर्णय लेने के लिए बुद्धि का प्रयोग करें। मसीहियों को अपने विवेक का प्रयोग करने के द्वारा परमेश्वर से प्रेम करना चाहिए (मरकुस 12:30)। उन्हें प्रमाणों को परखना सीखना चाहिए : उदाहरण के लिए :

- ***पढ़ें*** 1 कुरिन्थियों 10:23 - इसमें सिखाया गया है कि बाइबल में जिन-जिन बातों के बारे में मना नहीं किया गया है उन्हें करने की अनुमति प्राप्त है, लेकिन यह आवश्यक नहीं है कि वे फायदेमन्द या उन्नतिदायक ही हों। इसलिए, मसीही जन को परख लेना चाहिए : "जिन बातों की अनुमति है, उनमें से कितनी लाभदायक व उन्नति करने वाली हैं।"
- ***पढ़ें*** 1 कुरिन्थियों 7:1,9 - इसमें सिखाया गया है कि एक मसीही उन सभी कामों को कर सकता है जिनकी बाइबल में मनाही नहीं है, लेकिन जिन कामों को करने की अनुमति उसे प्राप्त होती है वह सब उचित नहीं (लाभदायक या उन्नति करने वाले) होती। इसलिए एक मसीही को पहले यह परख लेना चाहिए कि : "कौन सी चीज़ों की अनुमति हैं और कौन सी चीज़ें वास्तव में उत्तम हैं?"
- ***पढ़ें*** 1 कुरिन्थियों 7:28,40 - इनमें सिखाया गया है कि जो बातें किसी व्यक्ति को प्रसन्न करती हैं, ज़रूरी नहीं है कि वही बातें किसी दूसरे को भी प्रसन्न करें। इसलिए एक मसीही को परख लेना चाहिए कि : "किन बातों से समस्या उत्पन्न होती है और किनसे प्रसन्नता मिलती है?"
- ***पढ़ें*** 1 कुरिन्थियों 16:4 और 2 कुरिन्थियों 9:5 - इनमें सिखाया गया है कि जिन-जिन कामों को करने की सलाह दी जाती है ज़रूरी नहीं है कि उन सभी कामों को किया जाए। इसलिए एक मसीही को परख लेना चाहिए कि : "किन चीजों की सलाह दी गयी है और उनमें से कोई सी चीज़ वास्तव में ज़रूरी है?"
- ***पढ़ें*** मत्ती 6:33 - परमेश्वर ने हर मसीही के लिए एक प्राथमिकता को रखा है। इसलिए हर एक मसीही को निर्णय लेना चाहिए कि : "मेरे जीवन की कौन सी प्राथमिकताएँ परमेश्वर को प्रसन्न करेंगी?"
- ***पढ़ें*** नीतिवचन 16:1-4,7,9,25,33 और रूत 2 - इनमें सिखाया गया है कि एक मसीही को हमेशा महत्वपूर्ण निर्णय लेने, चुनाव करने और योजना बनाते समय परमेश्वर की शिक्षाओं का प्रयोग करना चाहिए। एक मसीही को परख लेना चाहिए कि : "उचित क्या है" (ज़िम्मेदार या उत्तम)?

ईश्वरीय ज्ञान अधिकतर विकल्पों को कम करते हुए किसी एक दिशा की ओर अगुवाई करता है। जब ऐसा होता है, तो वह एक विकल्प या चुनाव परमेश्वर को भाता है। लेकिन एक से ज़्यादा विकल्प समान रूप से उत्तम, और परमेश्वर की दृष्टि में ग्रहण योग्य प्रतीत होते हैं और मसीही जन उन विकल्पों

में से किसी एक विकल्प चुनने के लिए स्वतन्त्र होते हैं। इस दशा में परमेश्वर अपनी श्रेष्ठता के अनुसार बाकि का फैसला करेगा। परमेश्वर अपने बच्चों को कभी गलत मार्ग पर नहीं जाने देगा।

2. परमेश्वर मसीहियों को स्वयं कुछ विशेष निर्णय लेने की स्वतंत्रता और ज़िम्मेदारी सौंपता है।

सिखाएँ

(1) चुनाव करने की स्वतंत्रता ज़िम्मेदारी और जवाबदेही की माँग करती है।

परमेश्वर ने मनुष्य को एक रोबोट के रूप में नहीं, वरन् अपने स्वरूप में रचा है (उत्पत्ति 1:27)। फिर भी, परमेश्वर ने मनुष्य को हर एक काम के बारे में नहीं बताया है जो उसे करने चाहिए, लेकिन उसने मनुष्य को *आज्ञा* दी है कि वह परमेश्वर को अपने सम्पूर्ण मन, सम्पूर्ण हृदय और अपने सारे कामों से प्रेम करे। मनुष्य के जीवन के जिन क्षेत्रों के लिए बाइबल में विशेष तौर पर प्रकाशन नहीं दिया गया है उन सभी क्षेत्रों में निर्णय लेने, चुनाव करने के लिए परमेश्वर ने उसे विवेक दिया है, ताकि वह सही निर्णय ले सके। उसने मसीही को एक हृदय और इच्छा प्रदान की है, जिससे वह स्वेच्छा और *पूर्ण हृदय के साथ परमेश्वर की इच्छा* का पालन कर सकता है और उसे करना चाहिए (मरकुस 12:30-31)। उसने मसीही को एक विवेक दिया है (प्रेरितों के काम 24:16; रोमियों 2:15) जिसके द्वारा वह महसूस कर सकता है और उसे महसूस करना चाहिए कि उसके निर्णय ठीक या परमेश्वर को प्रसन्न करने वाले हैं या नहीं। और उसने हर एक *मसीही को देह* इसलिए (रोमियों 6:13,19) प्रदान की है कि वह परमेश्वर की इच्छा को पूरा कर सके और उसे ऐसा करना चाहिए।

अत:, परमेश्वर ने मसीहियों को विशेष निर्णय लेने के लिए केवल *योग्यता व स्वतंत्रता* ही प्रदान नहीं की है, बल्कि वह उन्हें उनके निर्णय और उनके परिणामों के लिए *ज़िम्मेदार और उत्तरदायी* भी ठहरायेगा। एक मसीही अपने द्वारा लिए हुए निर्णयों के लिए किसी दूसरे को दोषी नहीं ठहरा सकता।

परमेश्वर के साथ, स्वतंत्रता हमेशा सीमित होती है! किसी को भी इतनी स्वतंत्रता नहीं है कि वह अपने जीवन में अपनी मन मानी कर सके। परमेश्वर ने बाइबल में हर विषय के लिए विशेष निर्देश दिये हैं ओर हर परिस्थियों के लिए एक सीमा ठहरायी है जिसके दायरे में होकर ही एक मसीही को अपने निर्णय लेने, चुनाव करने और अपनी योजना बनानी पड़ती है। अत: एक मसीही को परमेश्वर के विशेष निर्देशों या बाइबल में दिये गये परमेश्वर की बुद्धि से पूर्ण शिक्षाओं के आधार पर ही अपने निर्णयों को लेना, चुनाव करना और योजनाओं को बनाना है।

(2) परमेश्वर ने मनुष्य को निर्णय लेने की एक अद्‌भुत आजादी प्रदान की है।

बाइबल की एक महत्वपूर्ण सच्चाई यह है कि, हमारे दैनिक जीवन में जिन ज़्यादातर क्षेत्रों में हम निर्णय लेते, चुनाव करते और योजना बनाते हैं, उनके बारे में परमेश्वर ने हमें कोई विशेष निर्देश नहीं दिया है। परमेश्वर ने मसीहियों को अपने निर्णय लेने की स्वतंत्रता बहुतायत से दी है। ज़मीनी तौर पर यह बहुत "आत्मिक" नज़र आता है, कि एक मसीही अपने जीवन में किसी भी प्रकार के काम को करने से पहले परमेश्वर की अगुवाई की खोज करता है। लेकिन, केवल उन बातों को छोड़ कर जिन बातों पर अत्यधिक बल दिया गया है, जिन बातों की आज्ञा दी गयी या जिनके लिए बाइबल में मना किया गया है, बाकि सारे क्षेत्रों में परमेश्वर चाहते हैं कि मसीही जन अपनी बुद्धि, इच्छा और विवेक का प्रयोग करे। उसने आज्ञा दी है कि : "परमेश्वर को अपने सारे मन से प्रेम करो" (मरकुस 12:30)। उदाहरण के लिए, एक चरवाहा अपनी भेड़ों को चराता है, लेकिन वह इस बात का फैसला नहीं करता कि उसे दिन के किस समय में उसे कौन सी घास खानी चाहिए। दूसरा उदाहरण : यदि परमेश्वर ने आपको

प्रयोग करने के लिए एक घड़ी दी है तो, आप उसका आदर क्या बार-बार परमेश्वर से समय पूछकर करेंगे या फिर अपनी घड़ी में समय देखकर? ठीक इसी प्रकार से परमेश्वर ने आपको प्रयोग करने के लिए बुद्धि, इच्छा और विवेक दिया है।

(3) कई बार, अलग-अलग प्रकार के चुनाव परमेश्वर को प्रसन्न कर सकते हैं।

हो सकता है कि परमेश्वर को पसन्द आने वाला कोई एक विशेष चुनाव न हो, वरन् वह बहुत से चुनावों में से एक विकल्प हो। परमेश्वर को पसन्द आने वाले उन सम्भव चुनावों में से एक चुनाव सही चुनाव ठहर सकता है। एक मसीही जो अपने दैनिक जीवन को मसीह के हाथों में समर्पित नहीं करता वह गलत निर्णय ले सकता है वरन् गलत निर्णय ही लेगा। लेकिन एक मसीही, जिसने अपना जीवन मसीह को समर्पित किया हो, वह मसीह पर भरोसा कर सकता है कि वह कोई गलत निर्णय नहीं लेगा।

(4) कुछ ऐसे क्षेत्र जिसमें परमेश्वर मसीहियों को चुनाव करने की आजादी प्रदान करता है।

- ***पढ़ें*** रोमियों 14:1-5 - एक मसीही निर्णय ले सकता है कि उसे क्या खाना है, बशर्ते उसके खाने से किसी व्यक्ति को किसी प्रकार की ठोकर न लगे। वह जिस दिन को मानना चाहे मनाने के लिए स्वतन्त्र है, लेकिन उसे किसी मूर्तिपूजकों के उत्सव में भागीदारी करने की स्वतंत्रता नहीं है।
- ***पढ़ें*** 1 कुरिन्थियों 7:8-9 - एक मसीही को पूरी तरह से किसी स्त्री से विवाह करने या कुँवारा रहने की पूरी आज़ादी है।
- ***पढ़ें*** 7:39 - एक मसीही किसी भी युवती से विवाह करने के लिए स्वतन्त्र है, बशर्ते वह एक नया जन्म पायी हुई मसीही होनी चाहिए।
- ***पढ़ें*** 2 कुरिन्थियों 9:6-7 - एक मसीही इस बात का निर्णय लेने के लिए स्वतन्त्र है कि वह स्थानीय कलीसिया में परमेश्वर के कार्यों या विश्वव्यापी मिशन कार्य के लिए कितना धन दे।
- ***पढ़ें*** फिलिप्पियों 2:13; प्रेरितों के काम 16:8-10 - मसीह में बने रहने वाले मसीही को, कभी इस बात का भय खाने की ज़रूरत नहीं होती कि वह परमेश्वर की सर्वश्रेष्ठ इच्छा के विरूद्ध कोई निर्णय लेगा। फिलिप्पियों 2:13 और प्रेरितों के काम 16:6-10 बताते हैं कि परमेश्वर अपनी सिद्ध इच्छा और योजना के अनुसार ही मसीही जन के मन में इच्छा और काम करने के प्रभाव को डालता है।

  उत्पत्ति 24 में भी, बाइबल दर्शाती है कि परमेश्वर ने अलग-अलग स्थान पर रहने वाले लोगों की सही समय पर सही निर्णय लेने में किस प्रकार से अगुवाई की।

3. परमेश्वर मसीहियों को निर्णय लेने के लिए बहुतायत से अनुग्रह प्रदान करता है।

परिचय। निर्गमन 34:6-7 में लिखा है, "यहोवा उसके सामने होकर यों प्रचार करता हुआ चला, 'यहोवा, यहोवा ईश्वर दयालु और अनुग्रहकारी, कोप करने में धीरजवन्त, और अति करूणामय और सत्य, हज़ारों पीढ़ियों तक निरन्तर करूणा करने वाला है परन्तु दोषी को वह किसी प्रकार निर्दोष न ठहराएगा, वह पितरों के अधर्म का दण्ड उनके बेटों वरन् पोतों और परपोतों को भी देने वाला है'।"

- परमेश्वर मसीहियों की *निर्बलताओं* में धीरजवन्त है।
- परमेश्वर उन लोगों पर दया करता है जो अपने *पापों* और गलत चुनावों और निर्णयों के लिए पश्चाताप करते हैं।
- परमेश्वर मसीही के जीवन में अपनी सिद्ध योजना को पूरा करने के लिए उसके जीवन की हर *परिस्थिति* में उसकी अगुवाई करता है।

(1) अनजाने में लिए गये गलत निर्णय।

अनजाने में गलत निर्णय लिये जाने पर एक मसीही को क्या करना चाहिए? जब किसी मसीही को पता चलता है कि अनजाने में उससे कोई गलती हो गयी है, और विशेष तौर पर जब उसे पता चलता है कि उसके किसी निर्णय से बहुत सी परेशानियाँ उत्पन्न हो गयी हैं तो वह सन्देह और चिन्ता करने लगता है। ऐसे समय पर उसे परमेश्वर की श्रेष्ठता और उसकी देखभाल पर भरोसा करना चाहिए (1 पतरस 5:7)! यदि किसी मसीही को ऐसा लगे कि यह ही परमेश्वर की इच्छा है और वह उस विचार के अनुसार काम करने लगे, लेकिन बाद में उसे पता चले कि उससे चूक हो गयी है, तो उसे परमेश्वर पर भरोसा करते हुए सारी परिस्थिति को परमेश्वर के हाथों में सौंप देना चाहिए। वह स्वयं से व उससे जुड़े सारे परिणामों को संभाल लेगा। एक मसीही को यह जानना ज़रूरी है कि वह सिद्ध या पूर्ण रूप से पवित्र नहीं है और वह अपने जीवन में गलतियाँ करेगा। लेकिन साथ ही साथ उसे यह भी अवश्य विश्वास करना है कि परमेश्वर सिद्ध है और परमेश्वर से प्रेम करने वालों के लिए सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती है (रोमियों 8:28)। हो सकता है कि एक मसीही को हमेशा परमेश्वर की सिद्ध इच्छा का पता न हो, लेकिन उसे हमेशा विश्वास के साथ काम करना चाहिए। "क्योंकि बिना विश्वास के परमेश्वर को प्रसन्न करना अनहोना है" (इब्रानियों 11:6)।

(2) जानबूझकर लिए गये गलत निर्णय।

जब कोई मसीही जानबूझकर गलत निर्णय लेता है तो उसे किस प्रकार के परिणामों की अपेक्षा करनी चाहिए? परमेश्वर ने योना को आज्ञा दी थी कि वह जाकर नीनवे के लोगों को परमेश्वर का वचन सुनाएँ (योना 1:2)। लेकिन योना नबी डरा हुआ था इसलिए उसने जानबूझकर किसी दूसरे स्थान में भाग जाने का विचार बनाया, और वह सोचता था कि परमेश्वर उसे वहाँ नहीं पकड़ पाएगा। लेकिन परमेश्वर ने योना से पश्चाताप करवाने के लिए एक बड़ी मछली का प्रयोग किया। जब योना नबी ने पश्चाताप कर लिया तब परमेश्वर ने योना को दोबारा नीनवे जाकर उसके वचन का प्रचार करने का अवसर दिया (योना 3:1-2)।

ठीक इसी तरह से, परमेश्वर आपको वापस लाने के लिए आपके जीवन की अनेक परिस्थितियों का प्रयोग करता है। इससे यह साबित होता है कि परमेश्वर के पास सारे मसीहियों के लिए केवल एक ही योजना नहीं है। परमेश्वर के पास हमेशा दूसरी योजना होती है जो उस परिस्थिति में सबसे अच्छी योजना साबित होती है! जब कोई मसीही परमेश्वर की पहली योजना की अवहेलना करने से पश्चाताप कर लेता है, तो परमेश्वर उस पर तरस खाएगा और उसे क्षमा करेगा (1 यूहन्ना 1:9) और उस पर दया करते हुए उसे अपनी दूसरी योजना प्रदान करेगा जो उसकी पहली योजना के समान ही उत्तम योजना होती है। क्योंकि परमेश्वर की जितनी सन्तानें गम्भीरता के साथ मन फिराकर परमेश्वर की ओर फिर गयी हैं, उनके लिए परमेश्वर के पास तीसरी, चौथी और पांचवीं योजना भी है और वे सभी योजनाएँ सिद्ध योजनाएँ हैं, क्योंकि परमेश्वर क्षमा व प्रेम करने में सिद्ध है (नीतिवचन 24:16)। परमेश्वर ने यह ठान लिया है और कोई भी शक्ति उसे अपनी सन्तानों के लिए तैयार की गयी योजना को पूरा करने से नहीं रोक सकती (यशायाह 14:24,27)।

(3) अनियंत्रित परिस्थितियाँ।

मसीहियों को अपनी व्यक्तिगत परिस्थितियों में परमेश्वर की गुप्त इच्छा का सम्मान कैसे करना चाहिए? केवल परमेश्वर ही अपनी गुप्त इच्छा को जानता है (व्यवस्थाविवरण 29:29)। परमेश्वर परमेश्वर है, और उसके विचार और उसकी गति मनुष्य के विचारों और उसकी गति से उत्तम होती है (यशायाह

55:8-11)। बाइबल में प्रगट परमेश्वर की इच्छा सिद्ध है और वह अपनी योजना को पूरा करता है। लेकिन परमेश्वर की गुप्त इच्छा भी सिद्ध है और इस क्षेत्र में भी परमेश्वर अपनी इच्छा को पूरा करता है! उदाहरण के लिए, परमेश्वर ने हम पर कभी यह प्रगट नहीं किया कि, उसने हमें उस विशेष परिवार और इतिहास के इस विशेष समयकाल में *क्यों* पैदा किया (प्रेरितों के काम 17:16)। उसने कभी हमें यह नहीं बताया कि इस पृथ्वी पर हमारी आयु कितनी होने वाली है (भजन 90:10-12)। उसने हम पर कभी यह प्रगट नहीं किया कि उसने हमें हमारे जीवन की उस विशेष कठिन परिस्थिति से होकर क्योंकि गुज़ारा (रोमियों 5:3-4)। लेकिन परमेश्वर ने हम पर यह ज़रूर प्रगट किया है कि, "उससे प्रेम करने वालों के लिए सब बातें मिलकर भलाई को उत्पन्न करती है, अर्थात् उन्हीं के लिए जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाये गये हैं। परमेश्वर की गुप्त इच्छा अपनी सन्तानों के लिए सिद्ध इच्छा है। इसलिए एक मसीही को निर्णय लेना चाहिए कि वह अपना जीवन परमेश्वर को सौंप दे और यह भरोसा रखे कि परमश्वेर इन सारी विशेष परिस्थितियों में उसके जीवन के लिए अति उत्तम योजना बना रहा है (1 पतरस 5:7)।

4. सामूहिक या संगठनीय निर्णय।

परिचय। कई बार हमें एक सामूहिक निर्णय लेना पड़ता है। इन निर्णयों को भी हमें बाइबल में दी गयी शिक्षाओं और नियमों के दायरे में रहते हुए ही लेना पड़ता है। परमेश्वर ने किसी को भी (चाहे वह मसीही हो या गैर मसीही) यह अधिकार (हक) नहीं दिया है कि वह स्वयं अपने नियम बना सके या बाइबल में लिखी हुई परमेश्वर की इच्छा के विरूद्ध निर्णय ले सके।

मसीहियों में प्राचीनों की सभा (कलीसिया परिषद्) निर्णय लेती है जिसका प्रभाव कलीसिया के सभी सदस्यों पर पड़ता है। बाइबल में, मसीही कलीसिया और मसीही संगठनों की निम्नलिखित जिम्मेदारियों का वर्णन किया गया है :

ध्यान दें।

(1) शिक्षा के क्षेत्र में लिये जाने वाले निर्णय जिन्हें मसीही कलीसियाओं में सिखाया जाता है।

पढ़ें तीतुस 1:9 - परमेश्वर ने मसीहियों को मानवीय विचारों और आचरण के लिए मानचित्र या मार्गदर्शक (मसीही शिक्षाओं और जीवन के लिए) के रूप में बाइबल सौंपी है। कलीसिया का कोई भी सिद्धान्त या उसके विश्वास का अंगीकार, मसीही सिद्धान्तों और जीवन के आधार के रूप में बाइबल की जगह नहीं ले सकता है! हर एक मसीही का यह नियमित कर्तव्य है कि वह बाइबल का ध्यानपूर्वक अध्ययन करते हुए अपने विश्वास के अंगीकार का मूल्यांकन करे (तीतुस 1:9)।

(2) मसीही कलीसिया या मसीही संगठन में अगुवाई को लेकर लिये जाने वाले निर्णय।

पढ़ें इब्रानियों 13:17; 1 पतरस 5:3; प्रेरितों 5:29; 1 तीमुथियुस 5:20; 3 यूहन्ना 9:11; 1 कुरिन्थियों 5:12-13

मसीही अगुवे की आवश्यक योग्यताएँ। कलीसिया को बाइबल में दी गयी योग्यताओं के आधार पर प्राचीनों या अगुवों को नियुक्त करना चाहिए। कलीसिया अपनी तरफ से कोई ऐसा नियम या योग्यता को जोड़ नहीं सकता जो परमेश्वर द्वारा ठहराये गये नियमों के विरूद्ध हो।

मसीही अगुवे के लिए निर्धारित लक्ष्य। कलीसिया को बाइबल में सिखाये गये लक्ष्यों के आधार पर ही अगुवों के लिए लक्ष्यों को निर्धारित करना चाहिए : कि वह लोगों का चरवाहा हो, वह कलीसिया की

गतिविधियों का संचालक और संपत्ति का भण्डारी हो, वह परमेश्वर के वचनों का शिक्षक हो, और वह लोगों पर अधिकार जताने की बजाय उनकी सेवा करने वाला सेवक हो।

मसीही अगुवों का सीमित अधिकार। मण्डली को प्राचीनों के कार्यों के अधिकारों को भी सीमित कर देना चाहिए, जिसकी माँग बाइबल में की गयी है। मसीहियों को प्राचीनों को दी गयी ज़िम्मेदारी के क्षेत्र में उनका आदर करना चाहिए और उनकी आज्ञाओं को मानना चाहिए (इब्रानियों 13:17)। लेकिन, बाइबल में बतायी गयी ज़िम्मेदारियों के हिसाब से प्राचीनों के कार्यों के अधिकारों को भी सीमित किया गया है। प्राचीनों को उनके हाथों में सौपें गए विश्वासियों पर अधिकार जताने के लिए मना किया गया है (मत्ती 20:25-28; 1 पतरस 5:3)।

मसीही अगुवे अपने आप को "नबी", "एक महायाजक", और "बिशप" इत्यादि नहीं कह सकते। क्योंकि ऐसा करने के द्वारा वे मसीहियों में यह जताने की कोशिश करते हैं कि वे दूसरों की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण हैं। प्राचीनों की पीठ अर्थात् परिषद् में किसी एक व्यक्ति को "याजक", "आदरणीय (रेवरेन्ट)", "पासबान (पास्टर)", "फादर", "सेवक", "अगुवा", "शिक्षक" इत्यादि पद देना उचित नहीं है (मत्ती 23:8-12)।

मसीही लोग कभी भी ऐसे किसी अगुवे के निर्णयों का पालन करने के दबाव में नहीं हैं जो बाइबल में लिखे परमेश्वर के वचनों का खण्डन करते हों (प्रेरितों के काम 4:19; 5:29)। मसीहियों को अपने अगुवों को कभी यह अनुमति नहीं प्रदान करनी चाहिए कि वे उनके निजी जीवन के बारे में कोई निर्णय लें, यह निर्णय लेने का हक़ परमेश्वर को या फिर उन्हें खुद है (उदाहरण के लिए : उन्हें किस कलीसिया की सदस्यता लेनी चाहिए, उन्हें कलीसिया में क्या काम करना चाहिए, उन्हें कितना धन देना चाहिए, किसके साथ उन्हें विवाह करना चाहिए, उनके कितने बच्चे होने चाहिए, उन्हें अपने बच्चों का पालन-पोषण कहाँ और कैसे करना चाहिए इत्यादि)। कोई प्राचीन या मसीही अगुवा एक मसीही के जीवन में पवित्र आत्मा या बाइबल का स्थान नहीं ले सकता।

मसीही अगुवों का अनुशासन और उन्हें हटाया जाना। मसीहियों को परमेश्वर की आज्ञाओं और बाइबल की अवहेलना करने वाले अगुवों को समझाना चाहिए (1 तीमुथियुस 5:20) और यदि ज़रूरत पड़े तो उन्हें उनके पद से हटा देना चाहिए (3 यूहन्ना 9-11; 1 कुरिन्थियों 5:12-13)।

(3) निर्णय-कारी प्रक्रिया और उस प्रक्रिया से जुड़े मसीही नियमों के सम्बन्ध में निर्णय।

प्रक्रिया के नियम। मण्डली को उन चीज़ों या क्षेत्रों को लेकर निर्धारित की जाने वाली प्रक्रिया के लिए कलीसिया में नियम सीमित कर देने चाहिए जिनकी माँग बाइबल में की गयी है। प्राचीन या अगुवे मसीहियों से उनकी स्वतंत्रता और उनकी जिम्मेदारियों को उनसे न छीनें, क्योंकि ऐसा करने से मसीही लोग विधि सम्मत बन जाएँगे। जिसके कारण मसीही अगुवे हाकिम बन जाएँगे और वे हमेशा मसीहियों को आत्मिक तौर पर अपरिपक्व बनाकर रखेंगे। परमेश्वर ने लोगों को चेतावनी दी कि वे "अनुग्रह से जीवन यापन करने को" "व्यवस्था व नियमों के अधीन जीवन व्यतीत" करने से न बदल दें (गलातियों 5:4)। परमेश्वर अधिकार जताने वाले अगुवों को तुच्छ जानता है (मत्ती 29:25-28)।

निणर्यकारी प्रक्रिया। एक मण्डली का संचालन हमेशा एक प्राचीनों की पीठ (परिषद्) के द्वारा होना चाहिए किसी एक अगुवे के द्वारा नहीं, चाहे उस अगुवे को जो कुछ भी कहा जाता हो (1 तीमुथियुस 4:14)। मण्डली के प्राचीन या मसीहियों के संगठन के अगुवों को उनके हाथों में सौंपे गये अगुवों पर अधिकार नहीं जताना चाहिए (1 पतरस 5:3)। क्योंकि कलीसिया में हर साधारण विश्वासी द्वारा लिया

जाने वाला निर्णय कलीसिया का महत्वपूर्ण भाग होता है, जैसे कि किसी नये प्रेरित का चुनाव किया जाना (प्रेरितों के काम 1:15-26) और किसी सेवक (डीकन) का चुनाव करना (प्रेरितों के काम 6:1-7), अत: उन्हें कलीसिया के प्राचीन या पासबान तथा अन्य महत्वपूर्ण निर्णयों को लिये जाते समय शामिल किया जाना चाहिए। मसीही अगुवों को कलीसिया के सदस्यों को साथ लेकर ही कलीसिया से सम्बन्धित अन्य महत्वपूर्ण निर्णयों को लेना चाहिए।

अन्य महत्वूपर्ण निर्णयों को मण्डली की सभा आरम्भ होने से पहले ले लेना चाहिए। ऐसे कुछ निर्णयों के उदाहरण हैं : कलीसिया के सैद्धान्तिक अंगीकार से जुड़े निर्णय; कलीसिया के नैतिक आधार या नैतिक अंगीकार से सम्बन्धित निर्णय; पूर्व योजनाओं से सम्बन्धित निर्णय, कलीसिया में गतिविधियाँ और कार्यक्रम; या किसी अपराध करने वाले अगुवे के बारे में निर्णय लेना।

बाइबल आधारित कलीसियाओं में कोई भी निर्णय मत या चुनाव के माध्यम से नहीं किया गया था, परन्तु हर निर्णय का आधार एक तरफ बाइबल की शिक्षाएँ और दूसरी तरफ कलीसिया के सदस्यों की सहमति थी। यदि किसी महत्वपूर्ण मुद्दे पर प्राचीनों और कलीसिया के सदस्यों के बीच सहमति नहीं बन पाती है तो उस निर्णय को स्थगित कर देना चाहिए। इस दशा में कलीसिया को और अधिक अध्ययन करना चाहिए, उस मुद्दे पर अधिक चर्चा करनी चाहिए और उस विषय पर प्रार्थना करते हुए अधिक सलाहकारों को शामिल करना चाहिए (उदाहरण के लिए, शाखा कलीसियाओं से अन्य प्राचीनों को शामिल किया जाना चाहिए), और तब तक चर्चा करनी चाहिए जब तक कि बाइबल के आधार पर कोई आम सहमति न बन जाए। ऐसा होते हुए देखना प्राचीनों की ज़िम्मेदारी है।

घ. लोगों को अपने निर्णय लेना सिखाएँ

1. सलाह देना एक सलाहकार की जिम्मेदारी है, लेकिन निर्णय लेना पूछने वाले की जिम्मेदारी।

सिखाएँ। सवाल पूछने वाले को बाइबल में खोज कर उसकी सहायता करने की बजाय उसे अपनी राय बताने की परीक्षा या चुनौति हमेशा सामने खड़ी हो जाती है। सलाहकार को कभी भी प्रार्थी के बदले कोई निर्णय नहीं लेना चाहिए! कभी ऐसा न कहें, "अगर मैं तुम्हारी जगह पर होता तो, मैं ऐसा या वैसा करता।" इसलिए हमेशा सलाह माँगने वाले को सिखाएँ कि वह बड़े ध्यान से सलाहकार की बातों को सुनें तथा दूसरी तरफ उसे बताएँ कि निर्णय उसे अपने आप ही लेना होगा।

सलाहकार के द्वारा दी गयी सलाह कभी भी प्रार्थी की तथ्यों को खोजने में सहायता करने और उसे यह समझाने से ज़्यादा और कुछ नहीं होगी कि उस स्थिति में उसके निर्णय लिये जाने का क्या परिणाम होगा।

निर्णय अन्त में निवेदक के द्वारा ही लिया जाना चाहिए। उसे ही अपने द्वारा लिये गये निर्णयों, चुनावों और बनायी गयी योजनाओं और उनके परिणामों का ज़िम्मेदारी भी उठानी चाहिए। सलाह देने वाला कभी निवेदक को यह न बताये कि उसे क्या करना चाहिए, नहीं तो निवेदक उस सुझाव के अच्छे नतीजे न आने पर सलाहकार पर दोष लगाने लगेगा। एक मसीही सलाहकार या परामर्शदाता कभी भी निवेदक और परमेश्वर के बीच में नहीं खड़ा होता। 2 कुरिन्थियों 1:24 में, प्रेरित पौलुस कहता है, "यह नहीं कि हम विश्वास के विषय में तुम पर प्रभुता जताना चाहते हैं; परन्तु तुम्हारे आनन्द में सहायक हैं, क्योंकि तुम विश्वास ही से स्थिर रहते हो।"

2. एक आदर्श बनना सलाहकार की ज़िम्मेदारी है, लेकिन उस आदर्श का अनुसरण करना एक निवेदक की ज़िम्मेदारी।

सिखाएँ। जब कोई सलाहकार निवेदक को बताता है कि उसने समान कठिन परिस्थितियों में क्या निर्णय लिया, चुनाव किया तो यह बात निवेदक के लिए बहुत मददगार साबित होती है। लेकिन, एक सलाहकार के लिए बेहतर यह है कि वह अपने निवेदक को कभी यह न बताए कि उसने उस प्रकार की परिस्थिति में क्या निर्णय लिया या चुनाव किया, क्योंकि वह सलाहकार के उस उदाहरण को परमेश्वर की इच्छा के रूप में ग्रहण कर सकता है। सलाहकार को अपने व्यक्तिगत अनुभव की बजाय बाइबल के हवाले व उदाहरण देते हुए उस निवेदक को प्रोत्साहित करना चाहिए। सलाहकार को निवेदक को अपना निर्णय लेने और उसके हिसाब से कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। सलाहकार को निवेदक को यह समझने में सहायता करनी चाहिए कि निवेदक ही लिये जाने वाले सारे निर्णयों और चुनावों, कामों तथा उनके परिणामों के प्रति ज़िम्मेदार होगा।

3. किसी दूसरे सलाहकार की सलाह पर या निवेदक के निर्णय पर कोई टिप्पणी या आपत्ति दर्ज करना सलाहकार की ज़िम्मेदारी नहीं है।

सिखाएँ। अगर किसी दूसरे सलाहकार द्वारा दी जाने वाली सलाह सीधेतौर पर परमेश्वर के वचन अर्थात् बाइबल का खण्डन न करती हो, तो किसी सलाहकार की सलाह की आलोचना नहीं करनी चाहिए। इसके अलावा अगर निवेदक का लिया गया निर्णय या किया गया चुनाव, उसका काम स्पष्टतौर पर बाइबल का विरोध न करता हो तो उसके निर्णय पर किसी प्रकार की कोई टिप्पणी न करें। क्योंकि केवल निवेदक अपने कामों और निर्णयों के लिए परमेश्वर के सामने ज़िम्मेदार और उत्तरदायी है। कभी भी निवेदक की विश्वास के अभाव के लिए आलोचना न करें। परमेश्वर कलीसिया में सभी को एक स्तर का विश्वास नहीं प्रदान करता है। जो मसीही कमज़ोर महसूस करते हैं उल्टा उन्हें प्रोत्साहित करना चाहिए (1 थिस्लुनीकियों 5:14)!

निष्कर्ष। अत: एक सलाहकार का कर्तव्य निवेदक की जितना सम्भव हो सके उतना तथ्यों की खोज करने में सहायता करना, उसे अपने निर्णय लेने और चुनाव करने के लिए प्रोत्साहित करना, तथा प्रतिक्रिया व्यक्त करने व उन कामों के परिणामों की ज़िम्मेदारी लेने में सहायता करना है।

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***[प्रतिक्रिया]***
	परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना	

अपनी बारी आने पर जो कुछ आपने सीखा है ***उसके प्रतिउत्तर के रूप में समूह में प्रार्थना करें।***
या समूह को दो या तीन भागों में बाँटकर आज प्राप्त शिक्षाओं के प्रतिउत्तर के रूप में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	***[निर्धारित कार्य]***
	अगले अध्याय के लिए	

(***समूह के अगुवे।*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।)

1. **समर्पण :** चेले बनाने तथा मसीह की कलीसिया की स्थापना करने के प्रति समर्पित हों।
2. "मसीही परिवार में बच्चों को प्रशिक्षण देना" पर किसी दूसरे व्यक्ति या समूह को - **प्रचार करें, शिक्षा दें या बाइबल अध्ययन पर ध्यान लगाएँ**। यदि आपके पास कोई बच्चा है तो, उसे परमेश्वर के राज्य के सिद्धान्तों के आधार पर शिक्षा प्रदान करना शुरू कर दें जो बाइबल में लिखी हैं।
3. **परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। इब्रानियों 4-7** में से आधे अध्याय पर प्रतिदिन एकान्त में मनन करें। पसन्द आने वाले विचार को लिखने के तरीके का प्रयोग करें। नोट्स बनाएँ।
4. **याद करें।** नयी पाँच आयतों को याद करें व दोहराएँ। **(14) यूहन्ना 14:6** - रोज 5 याद करी हुई आयतों को दोहराएँ।
5. **बाइबल अध्ययन। यूहन्ना 15** के आधार पर अगले बाइबल अध्ययन की तैयारी करें। पाँच चरणों द्वारा बाइबल अध्ययन करने के तरीके का प्रयोग करें।
6. **प्रार्थना।** इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।
7. मसीह की कलीसिया बनाने के सम्बन्ध में **अपने लेखे का अद्यपन करें**। जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।